पाठ - 16
घर वालों के साथ रसूल ﷺ का मामला

الدرس السادس عشر - هندي
معاملته مع أهله ﷺ

अहले खाना के साथ रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बरताव बहुत अच्छा था। आप बहुत खाकसार थे। हर समय घर वालों की ज़रूरतों को पूरा करने में लगे रहते थे। आप एक औरत के मक़ाम व मरतबे को एक इन्सान, कि हैसियत से देखते थे चाहे वह मां, हो या पत्नी हो या बेटी हो

एक आदमी ने आपसे सवाल किया कि मेरे अच्छे सुलूक का सबसे ज़्यादा हक़दार कौन है? आपने फ़रमायाः ''तुम्हारी मां फिर तुम्हारी मां इसके बाद भी तुम्हारी मां, और उसके बाद तुम्हारा बाप। इसी तरह आपने बयान फ़रमायाः ''जिसने अपने मां बाप को या उनमें से किसी एक को पाया और उनके साथ सद व्यवहार नहीं किया और इसी हाल में उनकी मौत भी हो गयी तो वह जहन्नम में दाखिल होगा और अल्लाह उससे दूरी बनाएगा।

आपकी पत्नी जब बर्तन से पानी पिया करतीं तो आप उस बर्तन को लेते और उसी जगह अपना मुंह रखते जहां उन्होंने रखा होता और आप कहा करते थेः ''तुम मे से बेहतर इन्सान वह है जो अपने घर वालों के लिए सबसे ज़्यादा बेहतर है। और मैं अपने घर वालों के लिए तुम में सबसे ज़्यादा बेहतर हूं।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहमतें

मेहरबानी के बारे में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हैः ''रहम करने वालों पर अल्लाह तआला रहम करता है, ज़मीन वालों पर रहम व करम का मामला करो, तुम पर आसमान वाला रहम व करम का मामला करेगा। हमारे नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस खूबी व मेहरबानी के सबसे ऊंचे मक़ाम पर थे। यदि हम छोटे, बड़े, रिष्तेदार और अजनबी लोगों के साथ आपके मामलों को देखें तो यह चीज़ बहुत ही खुले तौर पर निखर कर सामने आती है।

आपकी मुहब्बत, शफ़क़त व रहमत ही का नतीजा है कि जब आप किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुन लेते तो नमाज़ को आप हल्की कर दिया करते थे और उसे लम्बी नहीं किया करते थे। क़तादा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः ''मैं नमाज़ में खड़ा होता हूं और सोचता हूं कि नमाज़ को लम्बी करूं, इतने में बच्चे के रोने की आवाज़ सुनता हूं तो मैं अपनी नमाज़ को हल्की कर देता हूं इस अन्देशे से कि इस बच्चे की मां पर भारी न गुज़रे।

उम्मत पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहमत का हाल यह था कि वे हमेशा चाहते कि सभी लोग दीन इस्लाम में दाखिल हो जाएं। एक यहूदी लड़का जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा किया करता था बीमार हो गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसे देखने तशरीफ़ ले गए। आप उसके सर के पास बैठ गए और उससे कहाः ''इस्लाम स्वीकार कर लो। बच्चे ने अपने बाप को देखा जो उसके पास ही खड़ा था उसके बाप ने उससे कहाः अबू क़ासिम की बात मान लो। इस तरह बच्चे ने इस्लाम स्वीकार कर लिया और थोड़ी देर के बाद वफ़ात पा गया, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके पास से यह कहते हुए निकले ''तमाम प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिसने इसे जहन्नम की आग से बचा लिया।